Haryana Vidhan Sabha

Debgates

11th August, 1969

Vol. II No. 1

OFFICIAL REPORT

CONTENTS

Monday, the 11th August, 1969

	Page
Announcement by the Speaker	(1)
Obituary references	(1)

HARYANA VIDHAN SABHA

Monday, the 11th August, 1969

The Vidhan Sabha met in the Hall of Haryana Vidhan Sabha, Vidhan Bhavan, Sector , Chandigarh, at P.M. of the /clock. Mr. Speaker (Brig. Ran Singh) in the Chair.

ANNOIUNCEMENT BY THE SPEAKER

श्री अध्यक्ष: इस हाउस को मुझे बड़े दु:ख के साथ सूचना देनी पड़ती है कि हमारे इस हाउस के मैम्बर चौधरी जगदीशचन्द्र जी अप्रैल, 1969 को स्वर्गवास हो गए।

श्री मंगल सैन : आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। स्पीकर साहब, हमने जो नो–कानफिडेन्स मोशन का नोटिस दे रख है उसका क्या हुआ है ? विधान सभा के रूल्ज आफ प्रोसीजर और कन्डक्ट आफ बिजनैस के रूल नं० 65 के अनुसार सदन में कवैश्चन आवर के बाद यदि कोई और एजेंडा लिया जाए तो वह नो–कानफिडुंन्स मोशन को ही लिया जाता है। इसलिए श्रीमान् जी उस पर विचार किया जाना चाहिए।

श्री अध्यक्ष : जैसा कि आपको याद होगा, पिछली बार भी जब ऐसा मौका आया था तो उस रोज विाय शोक प्रस्ताव के और कोई कार्य नही किया गया था। इसलिए अच्छाा रहेगा कि हम उस चीज को कल किसी टाईम लें।

OBITUARY REFERENCES

मुख्य मन्त्री (श्री बन्सी लाल) : स्पीकर साहब, हमारे सदन की गत बैठक के बाद हमारे उस समय के राष्ट्रपति डाक्टर जाकिर हुसैन जी का देहान्त 3 मई, 1969 को हो गया था और इस हाउस के सदस्य माननीय श्री जगदीशचन्द्र जी का देहान्त 26 अप्रैल, 1969 को हो गया। इसी तरह हमारे पड़ौस के प्रान्त के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री सरदार लडमन सिंह गिल का देहान्त हो गया । हइसी तरह डा० गोकुल चन्द तारंग जो पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व एम० एल०ए० थे उनका भी 24 फरवरी, 1969 को देहान्त हो गया और इस तरह जत्थेदार मोहन सिंह नागोके जो पंजाब विधान सभा के एम०एल०ए० रह चुके थे उनका भी देहान्त 1 मार्च, 1969 को हो गया और श्री पिण्डीदास 14 जुलाई, 1969 को चल बसे। मैं स्पीकर साहब, आपकी अजाजत से एक शौक प्रस्ताव के जरिए इस सदन की तरफ से इन विंगत आत्माओं के निधन पर दु:ख प्रकट करता हुं और यह भी प्रस्ताव करता हूं कि यह शोक प्रस्ताव पास करके इसकी एक एक प्रतिलिपि दिवंगत पहापुरूषों के संतप्त परिवारों को भेज दी जाए।

स्पीकर साहब, डाक्टर जाकिर हुसैन जी हमारे देश के एक बहुत महान् व्यक्ति थे। वह खाली राष्ट्रपति ही नहीं बल्कि मनुष्यों में भी इतनी ऊंची कोटि के थे कि वह पूजा के लायक थे । उनका जन्म 8 फरवरी, 1897 को हुआ था। जब वह बड़े हुए तो सन् 1922 में देश में चल रह असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए उन्हें महात्मा गांधी से प्रेरणा मिली और उनसे वह बहुत

प्रभावित हुए। इसके बाद वह भिन्न भिन्न पोस्टों ूमें देश की सेवा करते रहे। वह जामिया–मिल्या के भी कुलपति रहे। बिहार के गवर्न्र रहं। उपराष्ट्रपति रहे और फिर राष्ट्रपति भी रहे। अगर डाक्टर जाकिर हुसैन जी के बारे में कुछ कहूं तो सूरज को दीपक दिखाना होगा। मैं आपके जरिए सदन से प्रार्थनाा करूंगा कि इस शोक प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि उनके संतप्त परिवार के पास आपके जरिए भेज दी जाए।

स्पीकर साहब, चौधरी जागदीशचन्द्र जी पंजाब विधान सभा के मैम्बर भी रहे और फिर हरियाणा विधान सभा के भी मैम्बर चुन कर आए । वह एक पुराने नेता थे और उन्होने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया । उनकी सवाओं से प्रान्त को बढ़ा लाभ हुआ और उन्होंने सदा बेलाग हा कर प्रान्त की और जनता की सेवा की । मैं समझता हूं कि उनके चले जाने से हरियाणा का बड़ा नुक्सान हुआ है। मैं सदन से प्रार्थन करूंगा कि उनके निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया जाए और उसकी एक प्रतिलिपि उनके संतप्त परिवार को भेज दी जाए।

पंजाब के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री सरदार लडमन सिंह गिल का निधन 26 अप्रैल, 1969 को हो गया । उन्होने अपनेी जिन्दगी बड़े ही साधरण व्यक्ति की हैसियत से शुरू की और बाद में सरकारी ठेकेदार भी रहे। उसके बाद राजनति में आए। फिर सन् 1962 में पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए । सन् 1967 में भी वह विधान सभा में चुन कर आ गए। फिर पंजाब के मुख्य

मन्त्री रहे । उनके निधन परन भी में शोक प्रस्ताव पास करने और इस प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि उनके संतप्त परिवार को भेजने की भी मैं सदन से प्रार्थना करूंगा ।

डा० गोकुल चन्द नारंग के निधन पर भी हम शोक प्रकट करते हैं । उन्होने अपने जीवन काल में स्वतन्त्रता संग्राम मैं हिस्सा लिया और जलियांवाला बाग की दुर्धटना में जब मार्शल ला लगा तो उनको गिरफ्तार किया गया और जेल में भेज दिया गया । इस तरह से उन्होने सदा ही देश की सेवा की मैं प्रार्थना करूंगा कि उनके निधन पर भी एक शोक प्रस्ताव पास किया जाए और उसकी प्रतिलिपि उनके संतप्त परिवार को भेज दी जाए।

जत्थेदार मोहन सिंह नागोके ने स्वतन्त्रता संगाम में बहुत बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया । उन्होने बड़ी लग्न से देश की सेवा की सन् 52 से लेकर 67 तक वह पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे। मैं प्रार्थना करूंगा कि उनका नाम भी इसी शोक प्रस्ताव में शामिल किया जाए और उसकी एक प्रतिलिपि उनके दुःखी परिवार को भेज दी जाए।

श्री पिण्डीदास जी का देहान्त 14 जुलाई 1969 को हो गया । वह लाला हरदयाल और सरदार अजीत सिंह के सहयोगियां में से थे। भारत छज्ञेड़ो आन्दोलन में उन्होने हिस्सा लिया । उनके निधान से हमें बड़ी क्षति पहुंची है। मैं सदन से प्रार्थनाा करूंगा

कि उनके परिवार को भी इस सदन के शोक प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि भेज दी जाए।

स्पीकर साहब, शोक प्रस्ताव पास करने के बाद यह सदन उनकी याद में कल तक के लिए उठ जाएगा।

राव बीरेन्द्र सिंह (अटेली) : आदरणीय स्पीकर साहब, जब से पिछली बार हम इस हाउस में बैठकर गए तब से अब तक देश में बड़े बड़े महान् नेताओं का स्वर्गवास हुआ । इससे देश को नाकाबले तलाफी नुक्सान हुआ। लीडर आफ दी हाउस ने जो शोक प्रस्ताव रखा आपोजीशन इस रंज और दुःख में दिल से उनके साथ है । इस तरह के नेता जो हमारे बीच से इसी साल में उठ गए हैं वह बहुत कम पैदा होते हैं और जो काम उन्होने किए होते हैं उन से जहां हमें रोशनी की झलक मिलती है वहां उनके चले जाने के बाद एक अन्धेरा भी छा जाता है। अगर पुराने नेताओं और साथियों में से इस किस्म के लोग उठते रहें तो वाकई देश को हानि पहुंचती है । डा० जाकिर हुसैन देश की जनता के सच्चे नेता थे। वह बहुत खुदाप्रस्त थे। ऐसा नेता बहुत अर्से के बाद पैदा होता है। तालीम के क्षेत्र में वह बहुत बड़े ऐजुकेशनिस्ट थे । हालांकि वह माईनपोरिटी कम्युनिटी से जाल्लुक रखते थे परन्तु देश की जनता के वे बहुत ही विश्वास पात्र थे। उनके अन्दर देश की जनता का जितना किीदा था वह बहुत ही विश्वास पात्र थे। अनके अन्दर देश की जनता का जितना अकीदा था वह उनके बहुमत से राष्ट्रपति पद पर चुने जाने से साबित हो

चुका था। उनकी बडत्री जबरदस्त शखसियत थी। वह इन्सानियत और शराफत के मुजस्समां थे। उन की तहजीब और उनका अदबो आदाब हर शख्स के ऊर असरअन्दाज होता था। अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से उन का गहरा सम्बन्ध रहा और वह जामिया मिलिया के फाडन्डर थे। राष्ट्रपति के पद पर वह जब से बैठे सारे देश के अन्दर एकता की एक लहर पैदा हो गई थी। उनकी इज्जत दुनियां में, बाहर के देशों में बहुत थी। डॉक्टर जाकिर हुसैन साहब के स्वर्गवास होने से जितना सदमा महें पहंचा है उस का इजहार करते हुए मैं अपोजीशन की तरफ से और अपनी तमरफ से लीडर ाअफ दी हाउस ने जो शोक प्रस्ताव पेश किया है उस का समर्थन करता हूं । उन की मौत से कुछ दिन ही पहले हरियाणा सरकार के खिालाफ एक मैंमोरेंडम लेकर हम उनकी खिदमत में हाजिर हुए थे। हरियाणा में जो कुछ होता रहा उसके मुताल्लिक हमारी उन के साथ बातचीत हुई उन्होने बड़े गौर से हमें सुन और सलाह दी कि अगर ऐसी चीजें जोती हैं तो आप लिख कर मुख को दो मैं उन पर गौर करूंगा और जांच करूंगा। पेशतर इसके कि हम दोबारा उनके पास जाते वे बदकिस्मती से स्वर्गवास हो गए। डाक्टर जाकिर हुसैनल के मुझे कुछ करबी रहने का मौका भी। इस उमर में भी वह नौजवानें से और खास करके सोशल सर्विस की जो बोडीज थीं, जैसे आल इण्डिया बोआयज स्काउट्स एसोसिएशन है, से सम्पर्क बनाए रखते थे। वह बोआयज स्काउट्स ऐसोसिएशन के पैटरन–इन–चीफ थे। मेरा इस सिलसिलें में उनके साथ बहुत ताल्लुक रहा। इस सिलसिलें में उनके दर्शन हुआ करते

थे। वह नौजवानों का कैरेक्टर बनाने की खास तौर पर कोशिश करते थे। यह एक ऐसी चीज थी जिस से नौजवानों को प्रेरणा मिलती थी। हम सब लीडर आफ दी हाउस के प्रस्ताव में शामिल हैं कि वह डाक्टर जाकिर हुसैन के खानदान के साथ सहानुभूति का इजहार करें।

डाक्टर गोकुल चन्द नारंग एक और बहुत बड़ी शख्सियत थे। ज्वायंट पंजाब में उन्होने देश की बेहतरी के लिए बहुत बड़ा पार्ट प्ले किया था। वह मिनिस्टर भी सम्बन्ध भी रहा। जिस वक्त मेरे पिता जी पंजाब असैम्बली के मैम्बर थे उस वक्त लम्बे अर्से तक यह उन के साथ हिन्दू महासभा पार्टी में रहे। डज्ञक्टर गोकुल चन्द बहुत बड़े बज्युकेशनिस्ट और बहुत बड़े इन्डस्ट्रियलिस्ट रहे। डनहोने पंजाब की बड़ी भरी सेवा की और आखरी वक्त तक देश के लिए बड़ी भारी लग्न रखते थे। उनके फौत होने पर भी हमें बड़ा सदमा और रंज पहुंचा है।

इसके इलावा हमारे नजदीकी साथी चौधरी जगदीश चन्द्र और सरकदार लछमन सिंह गिल लेजिस्लेचर में हमारे साथ इक्ट्ठे रहे। हरियाणा बनने से पहले पंजाब में सरदार लछमन सिंह गिल और हम इकट्ठे लेजिस्लेचर में थे। चौधरी जगदीश चन्द्र तो बहुत अर्से तक हमारे साथ लेजिस्लेचर में रहे। यह दोनेा साहिबान पब्लिक के बड़े खैरखह थे। लोगों के लिए काम करने की इन में बड़ी लग्न थी। बड़ी बेवक्त मौत हुई है इनकी। गिल साहब हांलांकि पंजाब विधान सभा के मैम्बर थे लेकिन पंजाब और

हरियाणा चूंकि हाल ही में अलग हुआ है इसलिए गिल साहब के स्वर्गवास हो जनो से ऐसा मालूम होता है कि जैसे वह हमारे साथ इसी हाउस के मैम्बर थे। उनकी बेवक्त मौत पर हमें अलीद अफसोस और रंज है।

चौधरी जगदीश चन्द्र शराफत के मुजस्समां थे। वह सच्ची लग्न से इस हाउस की सेवा करते रहे और उनके न होने से हमें बहुत दुःख होता है। स्पीकमर साहब में आप के जरिए इन सब नेताओं के खानदानों के साथ अपनी तरफ से और अपोजीशन की तरफ से सहानुभूति पेश करता हूं और लीडर आफ दी हाउस के रेजोल्यूशन को पूरी तरह स्पोर्ट करता हूं।

श्री रूप लाल मेहता (पलवल) : स्पीकर साहब लीडर आफ दी हाउस ने जो रेजोल्यूषन पेष किया है मैं उनके साथ मुतफिक हूं और मैं समझता हूं कि हमारे बीच में से महान् आत्माओं के उठ जाने से देष का बड़ा भारी नुक्सान हुआ है और वह कमी पूरी नहीं हो पाएगी। सबसे बड़ा नुक्सान राष्ट्रपति डाक्टर ज़ाकिर हुसैन के स्वर्गवास होने से हुआ है। वह इन्तहा दर्जे के नेक इन्सान थे और शराफत के मजस्समां थे। महात्मा गांधी के साथ वह देश के हित में काम करते रहे। सबसे बड़ी बात जो उन्होने की वह यह थी कि उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम मुस्लिम यूनिवर्सिटी के मुकाबले में ओखला में जामिया मिलिया को कायम किया और वह इसलिए क्योंकि उस वक्त मुस्लिम यूनिवर्सिटी गलत रास्ते पर चल रही थी। जामिया मिलिया में तालीम पा कर बड़ी

बड़ी हस्तियां पैदा हुईं जिन्होंने देश के लिए बड़ा भारी काम किया मरते दम तक भी देश के हित में डाक्टर ज़ाकिर हुसैन काम करते रहे। अभी जैसा कि लीडर आफ दी अपोज़ीशन ने कहा है मैं भी उनके साथ हरियाणा के मुख्य मन्त्री के खिलाफ मिलने के लिए गया था, उन्होने हमें बड़े ध्यान से सुना और हमें कहा कि आप यह सारी चीजें लिख कर भेज दें मैं उन पर गौर करूंगा। मगर स्पीकर साहब बदकिस्मती से वह पहले ही हम से जुदा हो गए। अगर वह ज़िन्दा रहते तो शायद अपने हाथों से कलम उठा कर फैसला करते। लेकिन हमें अफसोस है कि उनके उठ जाने से देश में एक बड़ाा भारी खला पैदा हो गया है जिको कि हम पूरा नहीं कर पायेंगे। इसके साथ साथ हमारे बजुर्ग नेता लाला पिण्डीदास जी जिन्होंने लाला हरदयाल और महता नन्द किशोर के साथ मिलकर देश को आज़ाद करवाने के लिए काम किा था उनके हम से जुदा होने पर हमें बहुत अफसोस ओर रंज है। उन्होंने देश की बहुत सेवा की उनके दामाद श्री प्रबोध चन्द्र जी उन्हीं की एक देन हैं। उन्होंने इन के अन्दर भी देशभक्ति का जज़बा कूट कूट कर भर दिया था। मैं समझता हूं कि देश के अन्दर आज अच्छे लीडरों का खत्मा होता जा रहा है। स्पीकर साहब, इसके साथ ही हमारे दोस्त चौधरी लगदीश चन्द्र जी पिछले दिनों में स्वर्गवास हुए। वह एक निहायत नेक इन्सान थे और तालीमयाफ्ता थे। हमें अफसोस है कि हमारा एक नज़दीकी साथी, नेक काम करने वाला दोस्त हम से जुदा हो गया है। वह गुरूकुल के तालीम याफ्ता थे और हमेशा सैलफलैस वर्कर रहे। इसलिए उनका भी हमें बहुत अफसोस है।

स्पीकर साहब श्री गोकुल चन्द नारंग के स्वर्गवास होने का भी हमें बहुत अफसोस है। उन्होंने पंजाब की बहबूदी के लिए बड़ा काम किया हालांकि वह हिन्दू महासभा में थे। मार्शल ला के दिनों में उन्होने बहुत काम किया और उस वक्त उन्को जेल में बन्द कर दिया जाता लेकिन उन्होने देशभक्ति का मार्ग नहीं छोड़ा था। इन महान् आत्मा के चले जाने से देश को बड़ा भारी नुक्सान हुआ है। मैं महसूस करता हूं कि इन आत्माओं के होते हुए देश की काफी तरक्की हो सकती थी।

मलिक मुख्तियार सिंह (सोनीपत) : स्पीकर साहब, जो शोक प्रस्ताव लीडर आफ दी हाउस ने इन महान् आत्माओं के बारे में हाउस के सामने रखा है और जिन ख्यालात का इज़हार किाय है मैं अपनी और अपनी पार्टी की तरफ से उनके साथ एसोसियेट करता हूं और इज़हारे अफसोस करता हूं। स्पीकर साहब, डाक्टर ज़ाकिर हुसैन साहब जो हमारे देश के राष्ट्रपति थे उनको मझे कुछ नज़दीक से देखने का मौका मिला है क्योंकि जब मैं राज्य सभा का मैम्बर था तो वह उसके चेयरमैन थे। वह फरिश्ता सीरत, बड़े खुदाप्रस्त, वतन प्रस्त और बड़े बुलंद इख्लाक की शखसियत थे। उन्होने अपनी ज़िन्दगी एक मास्टर के तौर पर शुरू की और इस तरह हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये काम करते हुए और सयासी मैदान में काम करते हुए देश में जो सबसे ऊंचा स्थान हो सकता है वह हासिल किया। आज आप देखते हैं कि मास्टरों की क्या हालत है। खैर मैं इस वक्त इन चीजों की तरफ नहीं जाना

चाहता । मेरे कहने का मतलब है कि उनको इस जमात से बड़ा प्यार था और तालीमी मैदान में उन्होने बड़ा काम किया। जैसा कि लीडर आफ दी आउस ने भी बताया है कि वह अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के वाईस–चांसलर रहे और उन्होंने जामिया मिलिया की बुनियाद रखी और उसके वाइस–चांसलर रहे। मैंने उस अदारे में जाकर भी देखा है। जो काम उन्होंने वहां पर किया है वह काबिले तारीफ है। उनकी मौत से हिन्छुस्तान में जो खला पैदा हुआ है उसे भरना बड़ा ही मुश्किल है। ऐसे महान् आदमी की जगह पूरी करना बड़ा कठिन है। इसी तरह सरदार लछमन सिंह गिल की मौत से बड़ा दु:ख हुआ हैं उनके साथ पांच साल तक मुझे जब मैं पंजाब विधान सभा का मैंबर उनके साथ रहा काम करने का मौका मिला है। वह किसानों और गरीब लोगों के बड़के हमदर्द थे हालांकि और खास तौर पर देहाती जनता के साथ बड़ी हमदर्दी थी और उनकी तरक्की की तरफ बड़ी लग्न के साथ काम करते थे। वह अकाली पार्टी के जनरल सैक्रेटरी थे लेकिन वक्त के थपेड़ों ने उनको उसे छोड़ने के लिये मजबूर किया और वह उसे डोड़ कर पंजाब के चीफ मिनिस्टर बने। अपने अहदे हकूमत में उन्होंने पंजाब में गांव में रहने वाले लोगों की बहबूदी के लिये बड़ी दिलचस्पी दिखाई और इन कामों में पेश पेश रहे। हमें अपने पुराने साथी चौधरी जगदीश चन्द्र जी की बे–वक्त मौत का भी बड़ा अफसोस है। पहले तो हमारी उनके साथ ज्यादा वाकफियत नहीं थी लेकिन यहां आकर बतौर इस विधान सभा के मैम्बर हम उनके साथ रहे और उनको करबी से देखा। उनकी ज़िन्दगी बड़ी

सादा थी और वह बड़े नेक सीरत थे। वह शरीफ और सच्चे मायानों में इन्सान थें। ऐसे मौका पर उनकी मौत हो जाना जबकि हरियाणा को बड़ी ज़रूरत थी हमारी बदकिस्मती की बाता है। हरियाणा को आगे ले जाने और इसे तरक्की की राह पर ले जाने के लिये उनके दिल में बड़ी तड़पर रहती थी। इसी तरह पंजाब के साबिक लैजिस्लेटर जत्थेदार मोहन सिंह जी की मौत का भी हमें बड़ा रंज है। लाला पिण्डी दास जी का भी देश के लिये बड़ाा काम है और कुर्बानियां है। सर गोकुल चंद नारंग पार्टीशन से पहले पंजाब में मिनिस्टर रह थे और उन्होंने भी देश की आज़ादी के लिये बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था हमें इन की मौत पर भी बहुत अफसोस हुआ है। इन सारी महान् आत्माओं के बारे में जो शो प्रस्ताव चीफ मिनिस्टर साहिब ने हाउस के सामने रखा है उसकी पुरज़ोर अल्फाज़ के साथ ताइद करता हूं और उनके परिवारें के साथ गहरा इज़हारे अफसोस करता हूं।

श्रीमती लेखवती जैन (अम्बाला शहर) : स्पीकर साहब, हमारा और हमारे देश का बड़ाा दुर्भाग्य है कि इतने महान् नेता हमारे बीच में से उठ गये हैं। हमारे देश के राष्ट्रपति जि को हम सब ने कुछ दिनों पहले अपने देश का राष्ट्रपति चुना था आज वह हमारे दरम्यान नहीं रहे हैं। उन की देश के लिये सेवायें, देश के लिये प्यार और आज़ादी की लड़ाई में कुर्बानियां जो हैं वह यह हाउस ही नहीं सारा देश जानता है। मैं इस से ज़्यादा इस बारे में और क्या कह सकती हूं ? उनके बारे में तो सारा देश जानता है

कि उन्होंने देश की कितनी सेवा की है। हमारे देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि ऐसी महान् आत्मा आज हमारे बीच में नहीं रही है। इसी तरह हमारे इस सदन के एक माननीय मैंबर श्री जगदीश चन्द्र जी हमारे में से चले गये हैं। पिछले सैशन में जब हम यहाँ इकट्ठे हुए थे तो वह हमारे मे थे लेकिन कितने अफसोस की बात है कि आज वह हमारे साथ नहीं हैं और हम से बिछुड़ गये हैं। उनका हलका मेरे पुराने हलके साथ लगता था और मैं जानती हूं कि वह अपने हलका के लिये कितना काम करते थे। उनके कामों की वज़ह से भी मुझे बहुत सारे वोट मिले थे। मैं जानती हूं कि किस तरह वह अपने इलैक्शन के काम को छोड़ कर मेरी मदद के लिये आये थे। उन के अन्दर जो सादगी थी वह सराहनीय थी हमें उनकी मौत से गहरा दुःख है हमारे पड़ौसी राज्य की विधान सभा के एक माननीय सदस्य सरदार लछमन सिंह गिल की मौत का भी हमें बड़ा दुःख है। उन्होंने पंजाब की जो सेवा की उसके बारे में आप सब जानते हैं। डाक्टर गोकुल चन्द नारंग जी के बारे में जो शोक प्रस्ताव आया है उसे देख कर मुझे बहुत पुरानी याद ताजा हो जाती है। जब मैं उनके साथ लाहौर असैम्बली में हाउस की मैम्बर थी तो डा० गोकुल चन्द नारंग लीड करते थे। आप जानते हैं कि उस वक्त इन्होंने अपने पंजाब के लिये और खास तौर से हिन्दुओं की भालाई के लिये कितनी सेवा की जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल यात्रा भी करनी पड़ी।

जत्थेदार मोहन सिंह नागोके ने देश के लिये जो जो कुर्बानियां की उसे भी हम किसी तरह से नहीं भुला सकते।

इनके इलावा लाला पिण्डीदास जी, जो आज हमारे दरम्यान नहीं हैं, ने देश की बड़ी सेवा की। इन्हें हम लाल जी कह कर पुकारा करते थे। इन्होंने देश को उन्नति के शिखर पर पहुचाया, जेल यात्रायें भुगतीं और तरह तरह के कष्ट झेले। मुझे वह वक्त याद है जब वे मेरे पति के साथ गुजरात जेल के अन्दर समय व्यतीत कर रहे थे। मैं समझती हूं कि उन्हीं के प्रभाव से उन की दोनों लड़कियों ने देश की सेवा में हिस्सा लिया ओर जैसा कि मेरे से पहले भी कहा गया है कि उनके दामाद श्री प्रबोध चंद्र जी आज तक देश की सेवा लग्न और धैर्य के साथ कर रहे हैं। यह लग्न उन्हें बहुत कुछ उन के स्वसुर से मिली थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उनकी लड़कियों और दामाद का ईमानदारी के साथ कामयाब होने में लाला जी का विशेष हाथ था। इतना ही नहीं, उन्हे खास तौर पर हरियाणा और पंजाब से बहुत प्यार था। आज मैं समझती हूं कि उनके नेक सलाह मशवरे से हम वंचित हो गये हैं जिसके लिये मुझे बहुत दुःख हैं अन्त में मैं इस प्रस्ताव का, जो लीडर आफ दी आउस ने प्रस्तुत किया हैं, उनुमोदन करती हूं।

श्री बनारसी दास गुप्ता (भिवानी) : अध्यक्ष महोदय, बड़े खेद की बात है कि आये दिन हमारे देश की महान् विभूतियों के निधन पर खाली हुए स्थान की पूर्ति करने वाली शक्तियां आज

देश में पैदा नहीं हो रही हैं। चिन्ता की बड़ी बात यह है कि जिन नेताओं ने, जिन महान् विभूतियों ने, देश की, राष्ट्र की सेवा की, देश को स्वतन्त्र कराने में बड़ी बड़ी कुर्बानियां कीं और स्वतन्त्रता के पश्चात् देश के निर्माण में बड़ा योगदान दिया, आज वे स्वर्गवासी हो चले हैं और हमें ऐसी गहरी चिन्ता में, दुःख में छोड़ गये हैं जिसका निवारण करना बड़ा कठिन है। हमें अपने देश की समस्याओं का सामना करने के लिये जो शक्ति, योगदान और साहस मिलना चाहिये, वह न मिलने से हम अपने दिल टटोलते हैं तो हमें निराशा होती है। आशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती। सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव सदन में पेश किया है, मरी इस प्रस्ताव के साथ बड़ी सहानुभूति है। डा० ज़ाकिर हुसैन जी महान् व्यक्ति थे, बड़े राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। जब हिन्दस्तान के अन्दर साम्प्रदायिकता की आन्धी चली, तरह तरह के तूफान चले, तरह तरह के झगड़े और फसाद पैदा हुए और हर प्रकार से जाति भेद और साम्प्रदायिकता का दबाव पड़ा लेकिन आप एक जटिल चट्टान की तरह अपने स्थान पर अड़े रहे और समाज विरोधी तथा देश विरोधी तत्वों को पनपने नहीं दिया। आपने शिक्षा शास्त्री की हैसियत से हिन्दुस्तान के शिक्षा–क्षेत्र में बड़ी सेवा की, बड़े बड़े ऐजुकेशनल इंस्टीच्यूशन्ज़ की स्थापना की और शिक्षा में भी गान्धी जी की विचारधारा पर एक क्रांति लाने की बहुत बड़ी सफल चेष्टा की। उन्होंने शिक्षा की पुरानी नीति को बदलने के लिये जीवनभर प्रयत्न किया राष्ट्रपति पद संभालने के पश्चादत्, देश के किसी कोने से, किसी पार्टी से या किसी व्यक्ति

को यह गुंजायश नहीं थी कि वह किसी प्रकार का संकेत कर सके कि आपने इतने उच्चे और महान् पद को निभाने में कहीं कोई कोताही की हो या कोई शिकायत का मौका दिया हो। दुर्भाग्य है इस देश का और हमारा भी दुर्भाग्य है कि हमें इतने महान् नेता से बिछड़ना पड़ा है।

चौधरी जगदीश चन्द्र जी का जहां तक सम्बन्ध है, आप सभी भाइयों ने उन्हें अच्छी प्रकार देखा है और उन के साथ बैठे हैं। वे सादगी के प्रतीक थे और सच्चे इन्सान थे। मुझे एक दो बार उनके निवास स्थान पर, उनके घर गांव जाने का इत्तफाक हुआ। इतने समय लैजिस्लेटर रहने के बावजूद भी उनका घर और जीवन बहुत सिम्ल था। जहां तक राजनैतिक क्षेत्र का सम्बध है, कोई भी व्यक्ति उन्हें सच्चाई और ईमानदारी से नहीं हिला सका।

इसी प्रकार स्वर्गीय नेता श्री लछमन सिंह गिल भी बड़े अच्छे नेता थे। और डा० गोकुल चन्द नारंग को हिन्दुस्तान का एक एक आदमी जानता है कि उन्होंने देश की आजादी में कितना हिस्सा लिया। उन्होंने देश के सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक सुधार के लिये कितना भारी काम किया, यह प्रत्येक व्यक्ति जानता है। हमें इनके निधन पर गहरा दु:ख है।

श्री पिण्डी दास जी, लाला लाजपत राय के साथी रह चुके हैं। वे लाला हरदयाल के अच्छे और निकटतम दोस्त थे जिन्होंने देश लिये बड़ी कुर्बानियां कीं। इन महान् व्यक्तियों के

बलिदान, यह देश कभी नहीं भुला सकता, वे हमेशा चांद की तरह चमकते रहेंगे। जहां तक राजनैतिक क्षेत्र का सम्बन्ध है, जितनी उन्होंने इस क्षेत्र में तपस्या की, उस ऋण से हिन्दुस्तान की जनता उऋण नहीं हो सकती। इसलिये सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव पेश किया हैं, उसके प्रति मैं हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूं और इस बात का समर्थन करता हूं कि यह शोक प्रस्ताव पास किया जाए और स्वर्गीय नेताओं के परिवारों के सदस्यों को इस प्रस्ताव की एक एक प्रतिलिपि भेजी जाए।

चौधरी रणबीर सिंह (किलोई) : अध्यक्ष महोदय, देश के वे बहादूर नेता, जिन्होने इस देश की गुलामी की जंजीरों को काटा था, एक एक करके हमसे जुदा हो रहे हैं। शोक प्रस्ताव में जिन मित्र बजुर्गों के नाम हैं, उन्होंने अपने अपने ढंग से देश आजाद कराने के लिये अपना जीवन लगाया। इन्होंने अपना कुटुम्ब कुटुम्ब नहीं समझा बल्कि देश को अपना कुटुम्ब बनाया। डा० ज़ाकिर हुसैन जी हिन्दुस्तान के राष्ट्रपति रहे और उन्हे भारत रत्न की उपाधि भी मिली। उपाधि तो कई बार मिल जाया करती है लेकिन उपाधि ठीक और डिज़र्विग व्यक्ति को मिले, ऐसा कम ही होता है। वे दरअसल में भारत के रत्न थे। देश को बनाने के लिये, देश की शिक्षा में सुधार लाने के लिये जितने चिार इन्होंने रखे हैं, अगर हमारे देश के भाई इन विचारों पर अमल करें तो निश्चय ही हमारा देश काफ़ी ज्यादा तरक्की कर सकेगा और कर सकता है। अध्यक्ष महोदय, डा० जाकिर हुसैन जी से जब भी मुझे

करीब बैठने का मौका मिला और उनसे चिारों का आदान प्रदान करने का मौका मिला उनके साथ सहमत हुए बगैर मैं नही रह सकता था। उनसे जब भी कोई भाई मिलने के लिये जाता था तो वे बड़े मीठे स्वर से अपने विचारों से ओत प्रोत करते थे। ऐसे बहुत ही कम इन्सान होते हैं जो अपने विचारों को सरल भाषा में और ऐसे तरीके से सामने रखते हैं जिसको हर व्यक्ति समझ सके। वैसे विद्वान तो बहुत होते हैं और उनमें गुण भी बहुत होते हैं लेकिन आवाम तक अपने गुणों को फैलाने की शक्ति बहुत कम लोगों में रहती है। डाक्टर ज़ाकिर हुसैन ऐसे लोगों में से एक थे। वे जहां एक बहुत उच्च कोटि के विद्वान थे वहां आवाम में जाकर एक साधारण व्यक्ति जैसे दिखाई देते थे ओर उन जैसा बन जाते थे। देश के अन्दर कई कठिन वक्त आए, कई आड़े वक्त आए और कई इम्तहान के वक्त आए लेकिन डाक्टर साहब हमेशा हर इम्तहान में पास हुए और हमारे देश को आगे ले गए।

इसी तरह हमारे साथी जगदीश चन्द्र जी 1946 में पंजाब विधान सभा के सदस्य चुन कर आए और काफी लम्बा अर्सा सन् 1962 तक विधान सभा के सदस्य रहे। उस के बाद फिर 1967.68 में वे इस सदन के सदस्य चुने गये। अध्यक्ष महोदय, वैसे तो कहना आसान होता है लेकिन जब कोई विभूति मिलती है, कोई मौका मिलता है सेवा करने का, सेवक के नाते काम करना बड़ा मुश्किल होता है। हर सेवा करने वाले इन्सान का इम्तहान ही यही होता है है कि जब उस को सेवा करने का मौका मिलता है

तो क्या वह सेवक बन कर सेवा भी करता है या नहीं। मैं मानता हूं, अध्यक्ष महोदय, इस सिलसिले में श्री जगदीश चन्द्र जी का जीवन हम सबको और आने वाली पीढ़ी को शिक्षाप्रद रहेगा।

इसी तरह सरदार लछमन सिंह गिल हिन्दुस्तान की आजादी के सेनानी रहे हैं। देश को आजाद कराने के लिए वे कई बार जेल भी गए। पहले वे समाजवादी बने और फिर अकाली पार्टी में आए। सन् 1962 में वे अकाली पार्टी से विधान सभा का सदस्य चुनकर आए। जिस समय विरोधी दल के सदस्यों के नाते जोश और खरोश के साथ वे अपने विचार प्रकट करते थे, अपनी भावनाओं को प्रकट करते थे, उसे देख कर हमें पंजाब में दूसरी तरफ बैठे हुए ऐसा महसूस होता था कि विरोधी दल में होता हुआ इन्सान कई दफा फजूल ही जोश दिखाया करता है लेकिन जब उसे काम करने का मौका मिलता है तो वह उस तेजी और जोश के साथ काम नहीं करता लेकिन सरदार गिल ने इस बात को कुछ हद तक गलत सिद्ध किया। वे देहात में पैदा हुए थे और उन्हे देहात के लोगों से बड़ा प्यार था उनके समय में मेहनतकश इन्सान को, किसानों को पूरा हिस्सा मिला। मैं मानता हूं इस बात को जिस वक्त हमारे दोनो प्रदेशों में चुनी हुई सरकारें थी तो सरदार लछमन सिंह गिल ने मुख्य मंत्री के नाते से किसान को उसकी पैदावार का अधिक मूल्य दिलाया हालांकि उन्हें हमसे कुछ ज्यादा फासला पड़ता था।

डाक्टर गोकुल चन्द जी नारंग के साथ रहने का तो, अध्यक्ष महोदय, मुझे मौका नहीं मिला लेकिन जिस तरह से विरोधी दल के नेता ने ज़िक्र किया मैं अपने पिता जी से, जिनको उनके साथ काम करने का काफी मौका मिला था, उनकी बातें सुना करता था। वे हिन्दुस्तान के बहुत ऊंचे इन्सानों में से थे। उनमें जोश भी था और होश भी था। आम तौर पर जोश के ासथ होश कम होती है लेकिन वे काफी समझदार इन्सान थे। पंजाब की, मंत्री पद पर रहते हुए उन्होंने काफ़ी सेवा की लेकिन जब वे मंत्री रहे तो भ्झी उन्होंने लोगों की काफ़ी सेवा की। किसानों की मदद के लिए उन्होंने गन्ने की मिल लगाई, शिक्षा के लिए कालेज वगैरा में अपना सहयोग दिया और शिक्षा के प्रोग्राम को आगे बढ़ाया।

इसी तरह हमारे साथी जत्थेदार मोहन सिंह जी भी एक बहादूर स्वतन्त्रता सेनानी थे। जिन्होने आजादी के वक्त की लड़ाई देखी है, चाहे वह गुरूद्वारा इन्तजाम सुधार सम्बन्धी लड़ाई थी या चाहे हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई थी, हमेशा अगली पंक्ति में रह कर कुर्बानी की और जिन्होने उसक वक्त की जेलों का नक्शा कैदी के नाते देखा है वह समझ सकता है कि उनमें कितना जोश था और कितना हौंसला था पंजाब में जब सेवकों को छांटने के लिए एक बोर्ड के वे सदस्य बने तो भी उन्होने हमेशा अपने ध्येयों को आगे रख कर ही छांट की और मैं मानता हूं कि उनकी छांट से आए हुए भाई, चाहे वे इधर आए हों या पंजाब में रह गए हो, पंजाब और हरियाणा की सही तौर पर सेवा करते रहेंगे। जब

वे अध्यक्ष महोदय, स्वयं विधायक बने तब भी उन्होंने बड़ो अहम रोल अदा किया। दो विरोधी विचारों वालें लोंगो को किसी एक प्वायंट पर सहमत कराना आम तौर पर बड़ा कठिन होता है मगर इस चीज़ में वे हमेशा आगे रहे। गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी के वे प्रधान रहे। जहां भी वे गए वहां उन्होंने देश की और प्रदेश की सेवा बड़े ऊंचे और अच्छे ढंग से की।

लाला पिण्डीदास जी एक बहुत ऊंचे, सच्चे और आजादी के बड़े हुए सेनानियों में से एक थे। जैसा कि बहिन लेखवती जैन ने बताया उनके दामाद और उनकी लड़कियों ने भी देश की सवेा की और देश की आजादी की लड़ाई में पूरा पूरा हिस्सा लिया अध्यक्ष महोदय, उनके जोश और हौंसल से न सिर्फ उनके खानदान ने बल्कि पंजाब के बहुत सारे भाईयों ने और हममें से भी काफ़ी लोगों ने बड़ा सबक सीखा है।

अध्यक्ष महोदय, जो साथी हमसे विदा हुए हैं उनके खानदानों से तो हमें महददर्दी है लेकिन मैं मानता हूं कि इस शोक में वे ही अकेले उनके खानदान में नहीं आते हैं बल्कि हम सब सदस्य, चाहे पंजाब के हों या हरियाणा के हों, और सारे देश देश के भाई बहिन उनके खानदान में आते हैं उनके परिवार वालों को उनके निधन से तो बहुत ही दुःख होगा लेकिन हमें भी दुःख हुआ है इन हालात में यह बहुत ही उपयुक्त बात है कि हम सदन के नेता द्वारा रखे गए प्रस्ताव को पास करें। इसके साथ ही साथ, अध्यक्ष महोदय मैं भागवान से प्रार्थना करता हूं कि वे उनके

खानदान को शक्ति दे उनके निधन को बरदाश्त करने की और हमें भी शक्ति दे ताकि हम उनके दिखाए हुए रास्ते पर आगे चलें और देश की तरक्की करें।

खान अब्दुल गाफ़ार खां (नग्गल) : जनाब स्पीकर साहब, इस वक्त तमाम हाउस पर एक रंज और गम का समा छाया हुआ है। हमारे लीटर और हमारे रहनुमां एक एक करके हमसे जुदा हो रहे है। बद किस्मती यह है कि, जैसे लाला बनारसी दास ने कहा, उनकी जगह लेने वाला कोई मिलता नहीं है। ढूंढे से भी बहुत कम मिलते हैं। उनकी रूहें इस वक्त हिन्दुस्तान को देख रही हैं और अन्दाजा लगा रही हैं कि जिनके लिए हमने अपनी तमाम जिन्दगी और अपना तमाम कैरियर सिर्फ किया वे क्यसा रहे हैं।

इसलिए हमें उनकी जिन्दगी से सबक हासिल करके अपने आपको इस बात का मुस्तेहक बनाना चाहिए कि हम से उनकी रूहें खुश हों। सबसये पहले जनाब मैं डाक्टर ज़ाकिर हुसैन साहब मरहूम के मुत्ताल्लिक अर्ज करना चाहता हुं। ज्यादा तो मैं उनके बारे में अर्ज़ नहीं कर सकता क्योंकि मेरा दिल भरा हुआ है। लेकिन फिर भी थोड़ा–बहुत उनके बारे में अर्ज़ कर दूं डाक्टर साहब एक बड़े मशहूर और बहादुर खानदान से ताल्लुक रखते थे। उनके तमाम के तमाम अज़ीजो–अकश्ब फौज़ में थे। डाक्टर साहब ने जब से अपनी तालीम हासिल करनी शुरू की थी तभी से उनके दिल में महात्मा गांधी और मोम्मद अली जौहर जैसे लीडरों की वजह से देश की ख्दिमत करने का जोश–खरोश पैदा

हुआ। डाक्टर साहब को जैसा कि बुज़ुर्गों से सबक मिला था, मुल्क की ख्दिमत करने का, उसी तरह से उन्होंने अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी । जनाबेआला, एक बहुत अहम वाक्या मुझे याद है जिस वक्त महात्मा गांधी तालीम के मुताल्लिक स्कूल कालेज़िज और यूनिवर्सिटियों से बाइकाट करने का अरशाद फरमा रहे थे उसी वक्त मौलाना मोहम्मद अली के साथ महात्मा गांधी जी ने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में प्रचार के लिये जाना चाहा। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी ने तो उन को इज़ाजत नहीं दी लेकिन अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ने उनको इज़ाजत दे दी और वे प्रचार के लिये वहां गये। वहां पर अलीबरादरान और महात्मा गांधी जी की तकरीर का डाक्टर साहब पर यह असर हुआ कि उन्होंने मुस्लिम यूनिवर्सिटी का बाइकाट किया। उन्होंने यह अहद किया कि एक छोटा सा मदरसा या कालेज बनाया जाये जिसको आज हम ओखला में देख रहे हैं। यह पहले पहल अलीगढ़ में शुरू किया गया था। उसके पहले वाइस चान्सलर ख्वाजास अब्दुल मज़ीद बनायो गये। उसके बाद इस यूनिवर्सिटी का बाइकाट किया था और चन्द एक उन के दोस्त भी उसमें शामिल थे और वे बाइकाट करते थे और कहते थे कि इस तरह की यूनिवर्सिटी नहीं होनी चाहिये। उन्होंने अपनी कोशिश से जिसको आज जामिया मिलिया कहते हैं बनाया और इसका नाम आज महज़ हिन्दुस्तान में ही नहीं दूसरे मुल्को में भी लिया जाता है। जनाबे–आली, जामिया मिलिया को अलीगढ़ से दिल्ली में लाया गया और दिल्ली में 1947 के फसादात के दौरान

जामिया मिलिया में काफ़ी लूट–खसोट हुई। लेकिन डाक्टर साहब ने इन बातों की कोई परवाह नहीं की और यह समझ कर कि यह अंग्रेजों की गलत तारीख का नतीजा है जो उन्होंने लिखी है और हम को पढ़ाई है। उन्होंने पूरी कोशिश के साथ सही वाक्यात और मामलात जो कुछ मुल्क के थे वे सब के सामने पेश किये। उन सही वाक्यात के पेश करने का यह नतीज हुआ कि अगर जनाबे–आजी आप वहां जायें मेरे ख्याल में आप वहां गये भी होंगे, वहां की तश्कील को देख कर आप हैरान हो जायेगें कि दूसरी यूनिवर्सिटीज़ और दूसरे कालेजिल़ की निस्बत इसमें काफी फर्क है। जब वहां पर छोटे छोटे बच्चों को पता चलेगा कि हमारे यहां कोई नये साहब तशरीफ़ लाये हैं तो वे बच्चे आप से पूछेंगे कि साहब, मुझे आप हुक्म फरमायें कि मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूं। यह तमाम की तमाम बातें डाक्टर ज़ाकिर हुसैन की देन है। डाक्टर साहब ने तमाम ज़िन्दगी तालीम को बढ़ाने के लिए खर्च की। वे समझते थे कि जब तक तालीम सही नहीं होगी तब तक मुल्क की सही तौर पर तरक्की नहीं हो सकती। डाक्टर साहब का सारा कैरियर तालीम का रहा। जब महात्मा गांन्धी जी ने बेसिक तालीम को बढ़ाने की पूरी कोशिश की। मुझे उसे वक्त का एक वाक्या याद है। उस जमाने में जब में फाइनेन्स मिनिस्टर थे। एक शख़्स ने मेरे सामने तालीम के सिलसिले में लियाकतअली खां मरहूम से शिकयत की कि डाक्टर ज़ाकिर हुसैन साहब कांग्रेस की तरफ़ से किये गये फैसल के लियाकतअली खां ने उस शख़्स को मेरे सामने खूब डांटा और उसको कहा कि जो कुछ चीज वे कर

रहे हैं वे ठीक कर रहे हैं। बेसिक चीज़ जो महात्मा गान्धी जी ने शुरू की है तुम अपने दिल में रख कर सोचो कि वह मुल्क के लिए मुफ़ीद है और हमारे लिए भी मुफ़िद है। उसमें कुछ हिस्सा हमारा भी है और दूसरों का भी है। जनाबेआला, डाक्टर साहब का बर्ताव सदा लोगों के साथ बड़ा अच्छा रहा। उनकी सादा जिन्दगी थी। उन्होंने सदा अपनी ज़िन्दगी में एक ही बात फरमायी, मुझे भी उनकी खिदमत में बहुत करीब, से नयाज़ हासिल करने का मौका मिला है। वह हमेशा फरमाया करते थे कि लोगों का आपस में इस बात पर झगड़ा होता है, टकराव होता है कि मैं कोई चीज़ हासिल करूं आगे आऊं लेकिन इस बात के लिए कभी कोई टकराव नहीं करता कि मैं मुल्क की ख्दिमत के लिए, पब्लिक की खिदमत के लिए या तालिम के लिए सब से आग निकल जाऊं। ीालांकि टकराव तो इन बातों पर होना चाहिए। लेकिन इस बात पर कोई टकराव नहीं करता है और दूसरे टकराव करते रहते हैं। टाक्टर ज़ाकिर हुसैन के बारे में लाला बनारसी दास जी ने जो कुछ कहा सही कहा है। जब वे हिन्दुस्तान के प्रज़ीडेण्ट बनाये गये कोई भी बच्चा सख़्त से सख़्त मुतअस्वी भी क्यों नहीं, तासुब की बिना पर कुछ लोग उनके खिलाफ भलें हों लेकिन उनकी काबलियत को मानते थे। प्रैजीडैंट चुनने के बाद उन्होन एक बात कीह कि ——

"तमाम का तमाम हिन्दुस्तान मेरा कुनबा है और मैं सब के लिए हूं।" उन्होने जो कुछ कहा थ उसको साबित करके

दिखाया। कोई भी शख्स आपको ऐसा नहीं मिलेगा जिसको डाक्टर ज़ाकिर हुसैन साहब के बारे में किसी किस्म की शिकायत हो वह हमसे जुदा हुए। हम उनकी तारीफ क्या कर सकते है, हम तो यही दुआ करते है कि खुदावन्दताअला उनकी रूह को शान्ति बख्शे और उन पर रहमत फरमाए।

श्री जगदीश चन्द्र जी सन् 1952 से लेकर 67 तक विधान सभा सदस्य रहे और वह मेरे खास तौर पर वाकिफ़ थे। हमारी उनकी कांस्टीचुएंसी मिलती–जुलती थी। वह निहायत सादा तबीयत के आदमी थे और पब्लिक के राम खाने वाले, पब्लिक की खिदमत करने वाले और निहायत नरममिजाज़ इंसान थे। वह निहायत काबिल शख़्स थे। मैं कभी कभी उनसे मज़ाक कर दिया करता था। तो वे यही जवाब देते थे कि खं साहब, मैं तो इससे भी बुरा आदमी हूं जितना कि आप जानते हैं। यह उनको काबलियत की बात थी। वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। तमाम हाउस के साथ में भी अपने आप को उनके परिवार के गम में शरीक करता हूं।

फिर जनाब सरदार लछमन सिंह गिल का देहान्त हो गया। वह निहायत दिलेर आदमी थे और निहायत जोरदार आदमी थे। ज़मीदारों और गरीब किसानों के लिये उनके दिल में दर्द था। वह भी आज हम से जुदा हो गये। डा० गोकुल चन्द नारंग बड़े आलिम–फाज़िल आदमी थे। वह अंग्रेजों के जमाने में भी वजीर रहे और जब मार्शल ला में जनरल गिरफ्तारियां शुरू हुई तो वह

भी गिरफ्तार किये गये। वह अपने दिल में लोगो की खिदमत करने का ज़ज़बा रखते थे। जत्थेदार मोहन सिंह नागोके के साथ मुझे नज़दीक से नयाज़ हासिल था। वह अपना काम बड़ी मुस्तैदी के साथ करते थे और बड़े अच्छे अकाली थे। जत्थेदार मोहन सिंह सन् 1952 से लेकर विाए एक बार के मेरे साथ ही रहे और विधान सभा के सदस्य के तौर पर वह खिदमत करते रहे। लाल पिण्डीदास के देहान्त के बारे में कहकर मैं खत्म करना करता हूं। वह बड़े मेहरबान थे। हम लोग जेलों में इकट्ठे रहे। जब कभी वह अम्बाला आते थे तो हमारे यहां ज़रूर आते थे। वह अग्रेजों के ज़माने में नज़रबन्द किए गए और उनको झंग की जेल में भेज दिया गया था। मैं समझता हूं कि अगर लाल पिण्डीदास जैसे हिन्दू व मुस्लमान बन जाएं तो फिर न किसी जनसंघ की ज़रूरत रहेगी न किसी मुस्लिम लीग की ज़रूरत रहेगी और न अकाली दल की ही ज़रूरत रहेगी।

श्री मंगलसैन : और कांग्रेस की ज़रूरत रहेगी ?

खान अब्दूल गफ्फार खां : वह कहा करते थे कि खानसाहब, आप की बहुबेटियां हमारे घर में इसी तरह से आ जा सकें जैसे हमारे घर की बहूबेटियां हमारे घर में इसी तरह से आ जा सकें जैसे हमारे घर की बहू बेटियां और हमारी बहू आपके घर में आ जा सकें। उन्होने अपने असूलों के लिये बहुत सफ़र किया लेकिन असूलों को नहीं छोड़ा। खुदावन्दताअला उनकी रूह को शांति दे, और उनकी रूह को हमारे लिये रहबर बनाए। अन्त में मैं

सभी महापुरूषों की रूह के लिये शांति की दुआ करता हूं और हाउस से अर्ज़ करता हूं कि हमारे ग़म की हमदर्दी का पैग़ाम इस हाउस की तरफ़ से उनके लवाहकीन तक पहुंचा दें।

Mr. Speaker : Hon. Members, a great deal has been said and appropriate tributes paid to the various departed leaders. I fully associate myself with the Leader of the House i.e. with the sentiments expressed by him as also by the other colleagues in this House about Dr. Zakir Husain, Chandhri Jagdish Chander and other prominent leaders who have left us during the last several months.

I may also mention that I had the privilege to be visited our late President, Dr. Zakir Husain, two years ago while I was Commandant in a big Military Institution. He spent about 6 hours with myself and my Institution and I am proud to say about the deep interest he showed as also the knowledge he had about the military matters, particularly, the defense problems of our country and the difficulties that a common soldier was faced with. He certainly had one of the deepest insights about the national problems faced by our country, particularly, in regard to the defense matters. I have no doubt that he was a symbol of secularism and national unity and that is the reason that today there is a big void which we find so difficult to fill up.

I shall certainly convey the sympathies of this House to the bereaved families and, in the end, I shall request you all to stand for two minutes as a mark of respect to their memories.

(All this stage the House stood in silence for two minutes as a mark of respect to the memories of the departed leaders)

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 2 P.M. tomorrow.

3-10 P.M.

(The Sabha then adjourned till 2 P.M. on Tuesday, the 12th August, 1969)